B.A. II.nd Sem

Socio-Economic Ideas and Institutions in Ancient India

Unit - IV - (कृषि Agriculture)

डॉ. हेमन्त भोदवाल - (12-5-20)

उत्खनन द्वारा प्राप्त भग्नावशेषों से ज्ञात होता है कि हड़प्पा-सभ्यता के निवासियों की आर्थिक स्थिति सुदृढ़ थी। सिन्धु के निवासियों का मुख्य व्यवसाय कृषि ही था। कृषिकार्य में प्रस्तर तथा ताँबे के उपकरणों और औजारों का प्रयोग किया जाता था। इस समय दो प्रकार की फसलें रबी और खरीफ की उगायी जाती थी – रबी की फसलों में जौ, गेहूँ, मटर, सरसों आदि तथा खरीफ में धान (चावल), तिल एवं कपास की खेती होती थी। इनके अतिरिक्त खरबूज, तरबूज आदि भी उगाये जाते थे। इस समय अधिकांश नगर सिंचाई की सुविधा से युक्त उपजाऊ नदी के तट पर स्थित थे। सिंचाई नदी के पानी से की जाती थी।

वैदिक युग में कृषि का पूर्ण विकास हो गया था। वैदिक कालीन अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार कृषि थी। कृषि में हल तथा बैलों का प्रयोग किया जाता था। भूमि की उर्वरता बढ़ाने के लिये खाद (गोबर) का उपयोग किया जाता था। तथा खेत की सिंचाई की जाती थी। साल में दो फसलें उगाई जाती थी जिसमें जौ व धान (चावल) की खेती की जाती थी। इसके अलावा भी मूँग, उड़द आदि को उगाया जाता था। सिंचाई के लिए वर्षाजल, नदी तालाबों का प्रयोग किया जाता था तथा कुएँ बावड़ी का उपयोग किया जाता था। कुएँ से पानी खिंचने के लिए रस्सी, डोल, तथा रहट द्वारा पानी खींचा जाता था। तथा उसे खेतों में नाली के द्वारा पहुँचाया जाता था।

उत्तर वैदिक काल में भी कृषि कार्य ही प्रमुख साधन था। इस समय का सबसे बड़ी उपलब्धि लोहे का आविष्कार महत्वपूर्ण था। जिस तरह ऋग्वैदिक काल में पत्थर और लकड़ी के हल होते थे और उन्हें 1, 4, 12, 24 बैल तक खिंचते थे तथा हल के फाल भारी होते थे जिससे किसान को ज्यादा श्रम करना पड़ता था लेकिन उत्तर वैदिक काल में यह महत्वपूर्ण परिवर्तन था।

कृषि कार्य करने से पहले खेत की जुताई की जाती थी और बीज बोया जाता था, फसल तैयार हो जाने पर उसे हँसिया से काटा जाता था। इसके बाद ओसाया जाता था। जिससे अन्न अलग और भूसा अलग कर लिया जाता था।

उत्तर वैदिक काल मे चावल, जौ, मुंग, उड़द, तिल, गेहुँ, मसूर गन्ना, शण, अलसी, भांग, कपास, आंम, नीबु, ककड़ी, कमल की ककड़ी, कमल की जड़, लोबी, सरसो, राई, हल्दी, मिर्च, खजूर, आंवला, बिल्व, नील, अदरक लहसून, जीरा, अंजीर, अंगूर, केला, इत्यादि की खेती होती थी।

पाणिनि ने दो प्रकार की उपजो का उल्लेख किया है पहला जो मनुष्य के परिश्रम से होती थी दूसरा जो सहज रूप से उग जाती थी। गेहुँ का उल्लेख ऋग्वेद को छोड़कर सभी वैदिक साहित्य में मिलता है। अथर्ववेद में कुछ मन्त्र हैं जिनमें फसल को नष्ट करने वाले कीड़ो और टिड्डियों ~~उल्लेख~~ को नष्ट करने का उल्लेख मिलता है।

दक्षिण भारतीय संगम युग में भी इसका उल्लेख है यहाँ चॉवल की अनेक किस्मे, गन्ना, बाजरा, तिल, काली मिर्च, हल्दी, सुपारी, कटहल, नारियल आदि की पैदावार होती थी। गन्ना शक्कर बनाने में उपयोग किया जाता था।

छठी शताब्दी ई.पू. में आकर लोहे का व्यापक रूप से उपयोग होने लगा और कई नगरों का उदय हुए। किसान के स्वामित्व और ग्राम-समुदाय पद्धति मुख्यतः जनपदीय व्यवस्था थी।

बौद्ध और ब्राह्मण स्रोतो से ज्ञात होता है कि तत्कालीन कृषि ने बहुत प्रगति हुई। कई नई फसलें उगाई जाने लगी। जिसको कृषि की विभिन्न प्रक्रियाएँ बौद्ध स्रोतो और पाणिनि ने उल्लेख किया है, जोते जुताई, बोआई, निराई-गुड़ाई, कटाई, ढोहकर खलिहान में लाना ओसनी (अनाज) छानना और दाना और भूँसे को अलग किया जाता था। मौर्य-पूर्व काल में धर्मशास्त्रों ने कृषि कार्य के लिए वैश्य वर्ग की सामान्य जीविका साधन बनाया है कृषि कार्य में स्थल क्षेत्र, आराम (बाग), सेतुबन्ध (जलागार), तड़ाग (पोखर) तालाब आदि शामिल रहते थे।

~~खेती खेति~~ खेती के लिए फसलें चुनने की पुरी स्वतन्त्रता थी, जहाँ नई बस्ती बसाई गई हो, वहाँ दूसरी फसल उगाने का अधिकार (समाहर्ता) तहसीलदार को रहता था।

राज्य खेती को बढ़ावा देता था। खेती करने वाले किसानों को शहद और करो में छूट दी जाती थी। इसका लेखा-जोखा गोप द्वारा रखा जाता था। भूमि को खेती के योग्य बनाकर किसानों को पट्टे पर दी जाती थी।

यूनानी लेखकों के आनुसार मौर्यकाल में भारत के अधिकांश लोक कर्षक थे और अन्न पर जीते थे। भारत के कर्षक मेहनती, समझदार और ईमानदार होते थे। कृषि मुख्य उद्योग थी। राजा का कर्तव्य होता था अच्छी खेती के लिए अच्छी भूमि की व्यवस्था करें। नगरो का विस्तार तेजी 600 और 300 ई.पू. के बीच हुआ यही कृषि जीवन की विशेषता थी। नगरों की किलेबन्दी हुई और नगर-निवेश का काम शुरू हुआ। ऐसे नगर पाटलिपुत्र, कौशाम्बी, श्रावस्ती आदि थे। कृषि उपज अधिक होने से व्यापार में उन्नति हुई।

सिंचाई :- खेती की उन्नति के लिए सिंचाई की व्यवस्था थी, भूमि के अधिक भाग को सिंचाई-सुविधा थी, ताकि हर कर्षक को पानी में बराबर-बराबर हिस्सा मिलता था। कौटिल्य ने कहा कि सिंचाई-शुल्क की भिन्न-भिन्न दरें निर्धारित होती थी। सिंचाई शुल्क उपज का पाँचवां चौथा और तीसरा भाग लिया जाता था। पोखरों और जलाशयों के अच्छा रखने का ध्यान रखा जाता था। खेती के लिये कूड़-कचरे और गोबर अच्छी खाद माने जाते थे।

महाभारत में और पुराणों में छः प्रकार की विपत्तियाँ बताई गई हैं - ज्यादा वर्षा, कम वर्षा, टिड्डियाँ, चूहे, पक्षी और पड़ोसी राज्यों से हमला। बुद्ध और मौर्यों के समय में कृषि उन्नत अवस्था में थी वनों की रक्षा और विकास पर पूरा ध्यान दिया जाता था।

बौद्ध संघ आम तौर से आपनी भूमि में खेती बटाई से करवायी जाती थी। और उसका सही बंटवारा होता था। इसका छः भाग में से छठा भाग संघ को जाता था। मिलिन्दपन्हो और मनु कहता है कि जो जंगल को साफ कर खेत बनायेगा वह जमीन उसकी हो जाएगी। ~~कनिस्क~~ कनिष्क के समय कृषि के तरीके में और भी उन्नति हुई उसके समय सलाम्रू और नासपती चीन मंगाया जाता था वह भी हमारे यहाँ खेती होने लगी।

गुप्त काल में कृषि आर्थिक जीवन का मुख्य आधार था। इस समय खेती के लिए भूमि की खूब मांग थी। राजा खेती को बढ़ावा देने के लिए भूमिदान देता था, जिनमे कुछ दान कर मुक्त भी होते थे। इस काल में खेती में और भी प्रगति हुई; जंगल साफ कर नए खेत बनाए गए, नीची जमीन से पानी बढ़ाया गया और कृषि अधिक से अधिक महत्वपूर्ण होती गई। धीरे-धीरे कृषि का विस्तार इतना हो गया कि किसान साल में दो से तीन बार तक फसल काटते थे। समुद्रपार विदेशों से नई-नई फसलें भारत में आईं। खेती के तरीकों में भी परिवर्तन आया। हल पहले जैसा ही रहा; कुल्हाड़ी, हंसिया और कुदाल के नए-नए प्रकार प्रचलन में आए। नारियल की खेती प्रथम ई. सन में देखने को मिली। फसल को नुकसान पहुंचाने वालों को दण्ड का प्रावधान किया गया यह गुप्त काल की विशेषता रही है। नारद कहता है कि अगर कोई किसान एक समय में खेत नहीं जोतता है तो उस खेत को दूसरा व्यक्ति उसमे खेती कर सकता था। गुप्त काल में खेती का बढ़ावा दिया जाने लगा।

*--